संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ६ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ अप्रैल २०२१
वर्ष : ३० अंक : १० (निरंतर अंक : ३४०)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

जिस परमात्म-सुख के आगे इन्द्र का राज्य भी तुच्छ भासता है ऐसा एकांत समाधि का सुख छोड़कर संत समाज में केवल हमारा उत्थान करने आये हैं। अवतरण दिवस पर कुछ देना है तो ऐसे साधन का कोई संकल्प कर लो जिससे तुम्हारी आध्यात्मिकता में ऊँचाई आ जाती हो। - पूज्य बापूजी

श्रीराम नवमी : २१ अप्रैल

ऐसी सेवा स्वामी को वश में कर देती है

श्री हनुमान जयंती : २७ अप्रैल १६

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

पूज्य बापूजी का अवतरण दिवस : २ मई

पूज्य बापूजी का जीवन मानो धरती पर अवतरित कर्मयोग है, भक्ति व ज्ञान योग है। साथ ही यह परदुःखकातरता, सहानुभूति, प्रेम, सांत्वना का ऐसा महान आदर्श है जिसकी कोई मिसाल नहीं है। कुछ झलकें...

हरिद्वार कुम्भ में संतों की माँग : 'बापूजी को जल्द-से-जल्द रिहा किया जाय !'

श्री १००८ महामंडलेश्वर स्वामी विश्वेश्वरानंद गिरिजी महाराज, महानिर्वाणी अखाड़ा : भारतवासियों ने यही समझकर सरकार को चुना था कि कम-से-कम अब तो हिन्दुओं को न्याय तो मिलेगा - इस बात पर सरकार को गौर करना चाहिए।

महंत परमेश्वरदासजी, महामंत्री, भारत साधु समाज, दक्षिण गुजरात : द्वारकावाले स्वामी केशवानंदजी को चारित्रिक आरोप में निचली अदालत ने दोषी करार दिया था लेकिन वे निर्दोष थे, ७ वर्ष बाद रिहा हुए। ऐसे ही हमारे आशारामजी बापू निर्दोष हैं और उन्हें रिहा किया जाय।

महामंडलेश्वर श्री १०८ स्वामी महेश्वरानंद पुरीजी महाराज : संत आशारामजी के ऊपर यह तो खुला षड्यंत्र है।

महंत श्री बर्फानी बाबा, पंचायती अटल अखाड़ा, जूनागढ़ : जब तक आशारामजी बापू का मान-सम्मान रखा गया तब तक हमारे देश में इतनी आफत नहीं आयी, जितनी अभी चल रही है।

अपनी निष्ठा पक्की करनी चाहिए !

जो भी निष्ठा होती है उसकी अपनी-अपनी एक प्रक्रिया होती है । उसमें साधन, स्थिति और फल क्या होता है - यह सब बिल्कुल पक्का होता है ।

भगवद्भक्त की निष्ठा

जिसके हृदय में ईश्वर-भक्ति है उसका बल है ईश्वर-विश्वास । चाहे रोग आये, चाहे शोक आये, चाहे मोह, लोभ या विरोध आयें, चाहे मृत्यु आये... हर हालत में उसका विश्वास बना रहना चाहिए कि 'ईश्वर हमारी रक्षा करेगा ।' सम्पूर्ण विपत्तियों को सहन करने के लिए ईश्वर पर विश्वास आत्मबल देता है ।

अद्वैतवादी की निष्ठा

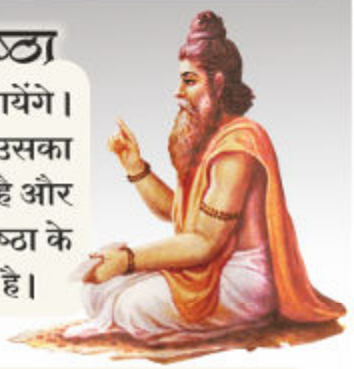

जिसकी अद्वैतनिष्ठा है उसके जीवन में भी रोग आयेगा, शोक और मोह के अवसर आयेंगे । कभी पाँव फिसल भी जायेगा और कभी ठीक आगे भी बढ़ेगा, कभी मृत्यु आयेगी । ऐसे में उसका बल यह है कि 'मैं नित्य-शुद्ध-बुद्ध-मुक्त ब्रह्म हूँ । इन परिस्थितियों से मेरा न तो कुछ बनता है और न बिगड़ता है । ये तो मृग-मरीचिका हैं, मायामात्र हैं, अपने स्वरूप में कुछ नहीं हैं ।' इस निष्ठा के बल के सिवाय यदि वह यह कहने लगे कि 'ईश्वर ! हमको बचाओ ।' तो उसकी निष्ठा कच्ची है ।

जापक की निष्ठा

कोई जप करता है तो अपने मंत्र पर उसका विश्वास है कि 'मंत्र हमारी रक्षा करेगा ।' पर कोई काम पड़ा, कोई रोग आया, कोई समस्या आयी अथवा मृत्यु का अवसर आया और वह अपना मंत्र छोड़कर भागा दूसरे मंत्र की शरण में तो वह अपनी निष्ठा से च्युत हो गया । बल हमेशा अपनी निष्ठा का होना चाहिए ।

योगी की निष्ठा

एक योगी, जो समाधि लगाने का अभ्यास करता है और उसके जीवन में कोई रोग, मोह, शोक का प्रसंग आता है तो वह यदि कहता है कि 'हे ईश्वर ! बचाओ !' अथवा 'आत्मा तो नित्य-शुद्ध-बुद्ध-मुक्त है ।' तो उसकी निष्ठा पक्की नहीं । उसको तो तुरंत अंतर्मुख हो जाना चाहिए । ऐसी शक्ति उसके अंदर होनी चाहिए कि तुरंत चित्त-वृत्ति का निरोध हो जाय - कहीं कुछ नहीं ।

ब्रह्मज्ञानी महापुरुष की निष्ठा

ब्रह्मज्ञानी महापुरुष के जीवन में जो कठिनाई आती है, उसको वे मंत्रजप करके, देवता के बल पर अथवा ईश्वर की प्रार्थना करके पार नहीं करते । वे जानते हैं कि 'अपने सच्चिदानंद स्वरूप में यह सब स्फुरणा-मात्र है । इसकी कोई कीमत ही नहीं है ।'

गुरुभक्तों की निष्ठा

गुरुभक्तों के लिए सद्गुरु से बढ़कर और कोई नहीं है । भगवान शिवजी कहते हैं : 'गुरु ही देव हैं, गुरु ही धर्म हैं, गुरु में निष्ठा ही परम तप है । गुरु से अधिक और कुछ नहीं है यह मैं तीन बार कहता हूँ ।' (श्री गुरुगीता : १५२)

तब तक अपनी निष्ठा को पक्का नहीं समझना जब तक अपनी निष्ठा के अतिरिक्त और किसीका सहारा लेना पड़ता हो । अपने घर में जो बैठने का अभ्यास है, वह साधक की सिद्धि का लक्षण है और जो पराये घर में बैठकर आँधी-तूफान से बचते हैं, उनकी निष्ठा पक्की नहीं है । अपनी निष्ठा पक्की करनी चाहिए ।

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : ३० अंक : १० मूल्य : ₹ ६
भाषा : हिन्दी निरंतर अंक : ३४०
प्रकाशन दिनांक : १ अप्रैल २०२१
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
चैत्र-वैशाख वि.सं. २०७७-७८

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पाँटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष, मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। **अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('हरि ओम मैन्युफेक्चरर्स' (Hari Om Manufactureres) के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।**

सम्पर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ६१२१०८८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ६१२१०७४२
७९६१२१०७१४ 'Rishi Prasad'
ashramindia@ashram.org
www.ashram.org www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य	अंग्रेजी
वार्षिक	₹ ६५	₹ ७०
द्विवार्षिक	₹ १२०	₹ १३५
पंचवार्षिक	₹ २५०	₹ ३२५
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ६००	---

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ६००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ १२००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ ३०००	US $ 80

Opinions expressed in this publication are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

इस अंक में...

❖ **जीवन पथदर्शन** ✲ यह कर लो तो सारी परेशानियाँ भाग जायेंगी ! ४
❖ **प्रेरक प्रसंग** ६, २४, २५
✲ देर-सवेर अपने स्वरूप की ओर वापस लौटना ही पड़ेगा !
✲ बालक के चरित्र ने पिता को किया विस्मित
✲ ...तो मन स्वतः परमात्मा में लग जायेगा
❖ **आप कहते हैं...** ✲ समाज को बापूजी की महती आवश्यकता है ८
✲ हरिद्वार कुम्भ में संतों की माँग... - धर्मेन्द्र गुप्ता
❖ **भक्तों के अनुभव** १०
✲ ऐसी सुख-शांतिदायी ऋषि प्रसाद कौन नहीं लेना चाहेगा ? - गौतम ताम्बोली
❖ **अपने जन्मदिन व महापुरुषों के अवतरण दिवस पर क्या करें ?** ११
❖ **पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग** १३
✲ गुरु-सान्निध्य के अविस्मरणीय मधुर संस्मरण - खुशाली बहन
❖ **योग-वेदांत-सेवा** ✲ ऐसी सेवा स्वामी को वश में कर देती है १६
❖ **अक्षय फलदायी अक्षय तृतीया** १७
❖ **विद्यार्थी संस्कार** ✲ पिता ने मना किया, बेटे को रंग लगा १८
✲ भगवत्प्राप्ति के उपाय ✲ हिम्मत, भक्ति और पवित्रता के लिए
✲ विकारी और संयमी जीवन का परिणाम ✲ विपत्ति और सम्पत्ति
❖ **तेजस्वी युवा** ✲ प्रेम को किसमें लगायें ? २०
❖ **महिला उत्थान** ✲ सच्चा सौंदर्य क्या ? २१
❖ **शिक्षा-पद्धति** ✲ गुरुकुल शिक्षा-पद्धति की आवश्यकता क्यों ? २२
❖ **तत्त्व दर्शन** ✲ देहत्रय-साक्षी विवेक २३
❖ **संतों की हितभरी अनुभव-वाणी** २६
❖ **जीवन जीने की कला** ✲ ध्यान में उपयोगी महत्त्वपूर्ण १२ योग २७
❖ **संस्था समाचार** २८, ३२
✲ देश-विदेश में गूँजी आवाज : 'निर्दोष बापूजी को रिहा करो !'
✲ विश्वपटल पर हर वर्ग के लोगों के हृदय में स्थान बनानेवाला पर्व
❖ **शरीर स्वास्थ्य** ३०
✲ बिगड़ी हुई जीवनशैली की समस्याओं में लाभदायी : आँवला
✲ घमौरियाँ हों तो ✲ ग्रीष्म ऋतु में क्या करें, क्या न करें ?
❖ **अनमोल कुंजियाँ** ✲ अक्षय तृतीया को पीपल-परिक्रमा का फल ३३
✲ भय दूर करने हेतु ✲ वासनाओं की विदाई और प्रभु की प्राप्ति !
✲ सर्वरोगहारी निम्ब (नीम) सप्तमी
❖ **परिप्रश्नेन...** ३४

विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग सेवाकार्य

DIGIANA DIVYA JYOTI — रोज रात्रि १० बजे
आराधना — रोज सुबह ७:३० व रात्रि ८:३० बजे
मंगलमय इंटरनेट चैनल — ashram.org/live
Asharamji Bapu | Asharamji Ashram — आश्रम के आधिकारिक यूट्यूब चैनल्स

✲ 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है। ✲ 'अराधना' चैनल जम्मू में JK Cable पर उपलब्ध है।

Download Rishi Prasad, Rishi Darshan & Mangalmay Digital Apps

गुरु-सान्निध्य के अविस्मरणीय मधुर संस्मरण

डीसा (गुज.) की रहनेवाली खुशाली बहन खत्री (वर्तमान निवास - अहमदाबाद), जिनको सन् १९७४ में पूज्य बापूजी से मंत्रदीक्षा लेने का तथा ६-७ साल की उम्र से ही पूज्यश्री के सत्संग एवं सेवा का सौभाग्य मिला है, वे उन परम सौभाग्यशाली क्षणों को याद करते हुए पूज्यश्री के कुछ मधुर व प्रेरणादायी प्रसंग बताते हुए कहती हैं :

अद्भुत था पूज्यश्री का वह तेजोमय विग्रह !

पूज्य बापूजी जब डीसा में रहकर अपनी ब्राह्मी स्थिति की अलमस्ती में सराबोर रहते थे तब से मुझे पूज्यश्री के सत्संग-सान्निध्य का लाभ मिलता रहा है। जब बापूजी पहली बार मधुकरी (भिक्षा) लेने गये थे तब एक सिंधी माई ने उन्हें भिक्षा देने से मना कर दिया था, यह प्रसंग तो सभीने सुना ही होगा। उन माई के घर से २-४ घर आगे ही हमारा घर था।

बापूजी मधुकरी लेने आते थे तब मैं ६-७ साल की थी। हाथ में पीतल का कमंडल लिये तथा पैरों में कभी चप्पल तो कभी जूते पहने जब पूज्य बापूजी आते थे तो कॉलोनी के हम छोटे बच्चे बापूजी के सफेद कपड़े, काले-काले घुँघराले बाल, गोरा-गोरा चेहरा देखते ही रह जाते थे। मेरी माँ तो बापूजी को देख के श्रद्धा-भक्ति से भर जाती थी कि 'कैसे अलमस्त बाबा हैं ! काश ! हमारे घर से भी कुछ भोजन-प्रसाद स्वीकार कर लें।'

पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग

हमको किसीसे पता चला कि वे पूज्य लीलाशाहजी बापू के शिष्य हैं और बहुत अच्छा सत्संग करते हैं। मेरी माँ एक बार आश्रम में सत्संग सुनने गयी और उसी दिन से उसका जीवन बदल गया। उसके चित्त पर सुख-दुःख आदि का प्रभाव पहले की भाँति नहीं पड़ता था। बस, सत्संग सुनती और उसी मस्ती में मस्त रहती। मुझे भी सत्संग का रंग लग गया। फिर तो हम रोज ही बापूजी के दर्शन करने और सत्संग सुनने जाने लगे।

पूज्य बापूजी का साधना का एक कमरा था। कमरे के बाहर छोटा-सा बरामदा और एक चबूतरा था। बापूजी कभी-कभी बरामदे में बैठकर थोड़ा-सा सत्संग करते थे फिर दरवाजा बंद कर लेते थे। कभी एकदम मौज में होते थे तो बाहर चबूतरे पर आकर भी सत्संग करते थे। उस समय सत्संग सुनने २५-३० लोग आते थे।

पूज्यश्री अधिकतर कमरे के अंदर ध्यानस्थ ही रहते थे। जब कभी बापूजी अपनी कुटिया का दरवाजा थोड़ा-सा ही खोलते तब उसमें प्रकाश-ही-प्रकाश दिखता था, मानो पूज्यश्री का तेज उनमें समा ही न पा रहा हो !

बापूजी का वह तेज तो बाप रे ! कोई चाहकर भी न भुला सके ऐसा विलक्षण था ! हम उस तेज के सामने आँख नहीं टिका पाते थे। किसकी ताकत थी कि उनके नेत्रों में झाँक सके ! उस समय जब कभी बापूजी की दृष्टि हम पर पड़ जाती थी तो फिर हम नहीं रहते थे, वे ही रह जाते थे। उस अनुभव का पूरा वर्णन नहीं हो सकता है। आज भी उनका वह पावन तेजोमय

ऐसी सेवा स्वामी को वश में कर देती है - पूज्य बापूजी

श्रीराम नवमी : २१ अप्रैल, श्री हनुमान जयंती : २७ अप्रैल

उत्साही शिष्य सद्गुरु की सेवा करने का, अपने स्वामी को रिझाने का साधन खोज लेता है। भले उसको कोई सेवा बताओ नहीं, कोई सेवा दो भी नहीं, तब भी जिसको उत्साह है वह सेवा खोज लेगा। रामराज्य के बाद एक बार लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न ने सीता माता का सहयोग लेकर प्रभु की सुबह से ले के रात्रि के शयन तक की सारी सेवाओं की सेवा-तालिका बनायी और कौन क्या-क्या सेवा करेगा इस पर रामजी से हस्ताक्षर करवा लिये।

दूसरे दिन आये हनुमानजी, उठाया पंखा तो भरत कहते हैं : ''यह मेरी सेवा है।''

और कुछ सेवा करने गये तो सीताजी कहती हैं : ''यह मेरी सेवा है।'' लखन भैया कहते हैं : ''यह मेरी सेवा है।'' शत्रुघ्न ने कहा : ''यह मेरे अधिकार में है।'' जिस सेवा को हनुमानजी छुएँ उसमें किसी-न-किसीका अधिकार हो। हनुमानजी व्याकुल हो गये : ''प्रभुजी ! मैं सेवा के बिना कैसे रहूँगा !''

रामजी : ''हनुमान ! जो सेवा इनके ध्यान में न रही हो वह तुम ढूँढ़ लो।''

हनुमानजी तो बहुत बुद्धिमान थे। भगवान को प्रेम करते-करते उन बुद्धियोगी को याद आया कि 'और तो सारी सेवाएँ इनके अधिकार में हैं किंतु प्रभुजी को जब जम्हाई आयेगी उस समय चुटकी बजाने की सेवा इनके ध्यान में नहीं आयी। जम्हाई तो कभी भी आ सकती है तो अब सतत दर्शन होंगे।'

हनुमानजी सामने बैठ गये। रामजी ने पूछा : ''हनुमान ! क्या चाहिए बेटे ?''

''प्रभु ! कुछ नहीं चाहिए। मैं सेवा में हूँ।''

''क्या सेवा कर रहे हो ?''

''प्रभुजी को कभी भी जम्हाई आ सकती है तो मैंने चुटकी बजाने की सेवा ले ली।'' रामजी अंदर-अंदर खुश हुए कि 'देखो ! सेवक फरियाद नहीं करता और सेवा खोज लेता है।'

अब कहीं भी प्रभुजी जायें तो हनुमानजी हाजरा-हजूर मिलें। रात हुई तो माँ सीता चरणचम्पी करने गयीं। हनुमानजी ने सोचा कि 'पति-पत्नी के बीच मुझ इतने बड़े बेटे का उपस्थित रहना यह तो अमर्यादा होगी। परंतु प्रभु को दिन में जितनी जम्हाइयाँ आयीं उससे भी ज्यादा रात को शयन करते समय आ सकती हैं।' हनुमानजी खिसक गये कूद के छत पर और वहाँ चुटकी बजाना चालू किया। तो रामजी ने जम्हाई ली और उनका मुँह खुला रह गया। सीताजी कहती हैं : ''प्रभु ! क्या हुआ, क्या हुआ ?''

मुँह बंद हो तब तो बोलें ! सीताजी घबरायीं। कौसल्याजी आयीं, सुमित्रा, कैकेयी आयीं, मंत्री

बालक के चरित्र ने पिता को किया विस्मित

(पिछले अंक में आपने पढ़ा कि भद्रशील ने अपने पिता गालव मुनि को बताया कि वह पूर्वजन्म में धर्मभ्रष्ट राजा धर्मकीर्ति था लेकिन उसके मरने के बाद यमपुरी में जब चित्रगुप्त के मुख से धर्मकीर्ति के अंत समय में उसके सत्संग व एकादशी व्रत करने के पुण्य-प्रभाव की बात यमराज ने सुनी तो उन्होंने धर्मकीर्ति को साष्टांग दंडवत् प्रणाम करते हुए उसकी पूजा की। अब आगे...)

यमदूत किसके पास नहीं आते ?

भगवद्भक्त भद्रशील आगे बताते हैं : ''तदनंतर धर्मराज ने अपने सब दूतों को बुलाकर कहा : ''दूतो ! मेरी बात सुनो । मैं तुम्हारे हित की बड़ी उत्तम बात बतलाता हूँ। धर्म-मार्ग में लगे हुए मनुष्यों को मेरे पास न लाया करो। जो भगवान के पूजन, भजन में तत्पर, संयमी, कृतज्ञ, एकादशी व्रतपरायण तथा जितेन्द्रिय हैं और जो 'हे नारायण ! हे अच्युत ! हे हरे ! मुझे शरण दीजिये...' इस प्रकार शांत भाव से निरंतर भगवन्नाम जपते रहते हैं, ऐसे लोगों को तुम तुरंत छोड़ देना । जो सम्पूर्ण लोकों के हितैषी तथा परम शांत भाव से रहनेवाले हैं और नित्य कीर्तन किया करते हैं, उन्हें दूर से ही त्याग दिया करो। उन पर मेरा शासन नहीं चलता। जो अपने सम्पूर्ण कर्म भगवान को समर्पित कर देते हैं, उन्हींके भजन में लगे रहते हैं, अपने वर्णाश्रमोचित आचार के मार्ग में स्थित हैं, गुरुजनों की सेवा किया करते हैं, सत्पात्र को दान देते, दीनों की रक्षा करते और निरंतर भगवन्नाम जप-कीर्तन में संलग्न रहते हैं, उनको भी छोड़ देना। जो पाखंडियों के संग से रहित, ब्राह्मणों (ब्रह्मवेत्ता संतों) के प्रति भक्ति रखनेवाले, सत्संग के लोभी, अतिथि-सत्कार के प्रेमी, भगवान शिव और विष्णु में समता रखनेवाले तथा लोगों के उपकार में तत्पर हों, उन्हें छोड़ दिया करो।

मेरे दूतो ! जो लोग भगवान की कथारूप अमृत के सेवन से वंचित हैं, भगवान के चिंतन में मन लगाये रखनेवाले साधु-महात्माओं से जो दूर रहते हैं, उन पापियों को ही मेरे घर पर लाया करो। जो माता और पिता को डाँटनेवाले, लोगों से द्वेष रखनेवाले, हितैषीजनों का भी अहित करनेवाले, देवता की सम्पत्ति के लोभी, दूसरे लोगों का नाश करनेवाले तथा सदैव दूसरों के प्रति अपराध में ही तत्पर रहनेवाले हैं, उनको यहाँ पकड़कर लाओ। जो एकादशी व्रत से विमुख, क्रूर स्वभाववाले, लोगों को कलंक लगानेवाले, परनिंदा में तत्पर, ग्राम का विनाश करनेवाले, श्रेष्ठ पुरुषों से वैर रखनेवाले तथा भूदेवों के धन का लोभ करनेवाले हैं, उनको यहाँ ले आओ। जो भगवान की भक्ति से मुँह मोड़ चुके हैं उन अतिशय पाप में रत रहनेवाले दुष्ट लोगों को ही तुम बलपूर्वक पकड़कर यहाँ ले आओ।''

उन्हें निश्चय ही भगवद्धाम प्राप्त होता है

इस प्रकार जब मैंने यमराज की बातें सुनीं

संतों की हितभरी अनुभव-वाणी

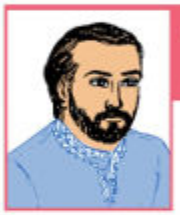

बुरे वचन से कैसे बचें ?

– संत रज्जबजी

बुरे वचन पत्थर तथा बाण के समान होते हैं। पत्थर और बाणों से देह को हाथ और गैंडे की ढाल मिलकर बचाते हैं, वैसे ही बुरे वचनों की चोट सावधान साधक विवेक और ज्ञान के द्वारा बचाते हैं।

मन भगवत्स्वरूप कब होता है ?

– श्री हरिबाबाजी

सभी भले-बुरे कर्म मन ही के द्वारा होते हैं। यदि यह मन भगवान को अर्पण कर दिया जाय तो मन, मन न रहकर भगवत्स्वरूप ही हो जाता है।

हे हरि ! मुझे सद्गुरु से मिलाओ

– गुरु रामदासजी

हे हरि ! मुझे सद्गुरु से मिलाओ क्योंकि मुझे सद्गुरु के चरण प्रिय लगे हैं। जब सद्गुरु ने मुझे अंतरात्मा राम का ज्ञानरूपी अंजन लगाया तो अज्ञानरूपी अंधकार दूर हो गया। सद्गुरु की सेवा करने से मैंने ऐसा परम पद पाया है कि अब मैं साँस लेते हुए और प्रत्येक ग्रास खाते हुए भी (अखंड रूप से) हरि का जप करता हूँ। जिन पर हरि प्रभु ने कृपा की है उन्हें सद्गुरु की सेवा में लगाया है। हे हरि ! मुझे सद्गुरु से, केवल सद्गुरु से मिलाओ क्योंकि मुझे सद्गुरु के चरण प्रिय लगते हैं।

गतांक की 'ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी' के उत्तर

(१) अहंकार (२) आत्मा-परमात्मा (३) गुरु

ब्रह्मचर्य-व्रत और उत्तम ध्यान हेतु...

– महावीर स्वामी

(महावीर स्वामी जयंती : २५ अप्रैल)

स्त्रियों को रागपूर्वक देखना, उनकी अभिलाषा करना, उनका चिंतन करना, कीर्तन (यश-वर्णन, गुण-कथन) करना आदि कार्य ब्रह्मचारी पुरुष को कदापि नहीं करने चाहिए। ब्रह्मचर्य-व्रत में सदा रत रहने की इच्छा रखनेवाले पुरुषों के लिए यह नियम अत्यंत हितकर है और उत्तम ध्यान प्राप्त करने में सहायक है।

उपकार ही सबका काज

– संत तुकारामजी

जो स्वयं तर जाते हैं उनकी कौन-सी बड़ाई है ? जो दूसरों का भला करते हैं उनका ही नाम लेना चाहिए। पृथ्वी इतना भार क्यों धारण करती है ? गाय दूसरों को दूध देती है लेकिन स्वयं दूध को चखकर देखती तक नहीं है। मेघ बरसते हैं, वृक्ष फल देते हैं। इनमें वे अपना कौन-सा लाभ देखते हैं ? चन्द्र और सूर्य एक क्षण बैठे बिना चक्कर क्यों लगाते हैं ? पारस लोहे को सोना क्यों करता है ? पारस स्वयं सोना नहीं बनता तो भी उसकी कीमत कम नहीं होती है।

कहे तुका उपकार हि काज।
सब कर रहिया रघुराज॥

उपकार करना ही सबका कार्य है। वास्तव में तो सब कुछ करनेवाले भगवान ही हैं। (अतः शास्त्र व संत सम्मत परोपकार करते हुए भी अपने को उसका कर्ता नहीं मानना चाहिए।)

बिगड़ी हुई जीवनशैली की समस्याओं में लाभदायी : आँवला

पूज्य बापूजी के सत्संग में आता है कि ''आँवले का बड़ा भारी महत्त्व है। आँवला सर्वश्रेष्ठ रसायन (tonic) है। इसके सेवन से शक्ति, स्फूर्ति और शीतलता का संचार होता है। यह शरीर को पुष्ट बनाता है, नेत्रज्योति बढ़ाता है । पित्त-प्रकोप से होनेवाली आँखों की जलन, पेशाब में जलन, बवासीर आदि को यह दूर करता है। गर्मियों (ग्रीष्म ऋतु : १९ अप्रैल से २० जून) में तो यह वरदानस्वरूप है।'' पूज्य बापूजी ने आँवले की उपयोगिता के साथ-साथ इसके वृक्षों को लगाने का भी प्रचार-प्रसार व्यापक स्तर पर करके समाज को लाभान्वित किया है।

वर्तमान समय में पेट की उष्णता एक बड़ी समस्या बन गयी है। ग्रीन हाउस गैसों के कारण वातावरण गर्मीवर्धक हो गया है। इससे तथा रात्रि-जागरण व मोबाइल, कम्प्यूटर, टी.वी. आदि के बढ़ते उपयोग से भी लोगों के शरीर में आंतरिक गर्मी बढ़ रही है। फास्ट फूड, चाय-कॉफी व अधिक मिर्च-मसालेदार भोजन का सेवन तथा असमय खाने से पाचन-संबंधी समस्याएँ होती हैं एवं शारीरिक गर्मी बढ़ती है। इस बिगड़ी हुई जीवनशैली का एक गम्भीर दुष्परिणाम है - पुरुषों में शुक्र धातु दौर्बल्य व स्वप्नदोष एवं महिलाओं में पानी पड़ने की बीमारी (श्वेत प्रदर)।

पुरुषों व महिलाओं की इन गम्भीर समस्याओं में आँवले का सेवन अत्यंत लाभदायी है। आँवला चूर्ण में मिश्री मिलाकर लें। इसका सेवन बढ़ी हुई उष्णता को मल के साथ बाहर निकालता है। यह गर्मी के दिनों में अत्यंत लाभदायी है। शीतल व वीर्यपोषक गुण से यह वीर्य को पुष्ट करके शीतलता, ताजगी, स्फूर्ति व बल प्रदान करता है तथा महिलाओं की पानी पड़ने की बीमारी में भी लाभदायी है।

ताजे आँवलों से बना 'च्यवनप्राश' भी शक्ति, स्फूर्ति, ताजगी तथा रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ाने हेतु श्रेष्ठ औषधि है । **च्यवनप्राश व मिश्रीयुक्त 'आँवला चूर्ण' के साथ ही आँवला रस, आँवला कैंडी, आँवला अचार, आँवला पाउडर आदि आँवले से बने उत्पाद संत श्री आशारामजी आश्रमों में व समितियों के सेवाकेन्द्रों से प्राप्त हो सकते हैं। इनका उपयोग करके आँवले के विभिन्न गुणों का लाभ ले सकते हैं।**

सावधानी : रविवार को आँवले का सेवन वर्जित है, शुक्रवार को कम लें। ❐

घमौरियाँ हों तो - पूज्य बापूजी

* नीम के १० ग्राम फूल व थोड़ी मिश्री पीसकर पानी में मिला के खाली पेट पी लें। इससे घमौरियाँ शीघ्र गायब हो जायेंगी।

* नारियल तेल में नींबू-रस मिलाकर लगाने से घमौरियाँ गायब हो जाती हैं।

* मुलतानी मिट्टी★ लगा के कुछ मिनट बाद स्नान करने से गर्मी और घमौरियों का शमन होता है।

★ आश्रम में व समितियों के सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध

हरि ॐ हैंड सैनिटाइजर

घृतकुमारी (Aloe vera) व नीम युक्त

९९.९ % कीटाणुओं को तुरंत नष्ट करने में सक्षम !

बाजार, अस्पताल, ऑफिस, कार में हों या हों यातायात में... खेलकूद, खाँसने-छींकने अथवा सार्वजनिक स्थानों से आने के बाद... बीमार व्यक्ति या पालतू पशुओं को छूने के बाद... अर्थात् कहीं भी, कभी भी... साबुन और पानी की अनुपलब्धता में भी रखें हाथों को कीटाणुमुक्त ।

गुलाब महक

(गुलाबजल)

यह शीतलताप्रदायक, प्राकृतिक सौंदर्यप्रद व शरीर के रंग को निखारनेवाला है । मुँहासों, त्वचा के लाल चकत्तों, आँखों के नीचे के काले घेरों तथा गर्मी के कारण होनेवाली फुंसियों को दूर करने में सहायक है ।

एलोवेरा जेल

यह त्वचा को कोमल बनाता है और उसमें निखार लाता है । त्वचा की कील-मुँहासे, काले दाग-धब्बे व झुर्रियों से रक्षा करता है । यह रूखी व तैलीय त्वचा दोनों के लिए हितकारी है । त्वचा को हानिकारक किरणों व प्रदूषण से बचाता है ।

सदाबहार तेल

यह बालों का झड़ना, असमय सफेद होना, गंजापन, रूसी आदि समस्याओं में लाभकारी है । यह बालों को काला, चमकदार तथा घना बनाने में सहायक है ।

शंखपुष्पी सिरप

स्मृति व दिमागी शक्ति वर्धक रसायन

स्मरणशक्ति बढ़ाने हेतु यह एक दिव्य औषधि है । साथ ही यह मानसिक तनाव, थकावट अनुभव करना, सहनशक्ति का अभाव, चिड़चिड़ापन, निद्राल्पता, मन की अशांति, चक्कर आना तथा उच्च रक्तचाप (hypertension) आदि रोगों में भी लाभप्रद है ।

रसायन चूर्ण

यह शक्ति, स्फूर्ति, ताजगी तथा दीर्घ जीवन देनेवाला है । जीर्णज्वर, वीर्यदोष, मूत्रसंबंधी रोग, स्वप्नदोष आदि में लाभदायी है । यह बढ़ती उम्र के साथ आनेवाली कमजोरी एवं रोगों से रक्षा करता है । रोगी-निरोगी सभी इसे ले सकते हैं । निरोगता व दीर्घ आयुष्य हेतु ४० वर्ष की उम्र के बाद इसका सेवन विशेषरूप से करना चाहिए ।

शतावरी चूर्ण

चिरयौवन, दीर्घायुष्य प्रदायक व मातृ-दुग्धवर्धक

यह बल, वीर्य व बुद्धि वर्धक, चिरयौवन व दीर्घायुष्य देनेवाली, वजन बढ़ाने में मददरूप, नेत्र एवं हृदय के लिए हितकर तथा रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ानेवाली श्रेष्ठ औषधि है । इसका नियमित सेवन सामान्य कमजोरी, दुर्बलता, वीर्य-संबंधी बीमारियों, अत्यधिक मासिक स्राव, वंध्यत्व आदि रोगों में लाभदायी है । इसके सेवन से प्रसूति के बाद दूध खुलकर आता है ।

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में व समितियों के सेवाकेन्द्रों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व सभीके विस्तृत लाभ आदि की जानकारी के लिए गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७३०, ९२१८११२२३३. ई-मेल : contact@ashramestore.com

बड़भागी हैं दुःखहारि श्रीहरि के प्रसाद से ओतप्रोत 'ऋषि प्रसाद' के सदस्य बनने व बनानेवाले

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2021-23
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2023)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/21-23
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2023)
Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st April 2021

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

शीतलता-प्रदायक, स्वास्थ्यवर्धक गुणकारी शरबत व पेय

गुलाब शरबत : सुमधुर, जायकेदार तथा शारीरिक व मानसिक थकावट को मिटानेवाला। **पलाश शरबत :** जलन, प्यास आदि में लाभदायक, गर्मी सहने की शक्ति बढ़ानेवाला। **लीची पेय :** लीची करती है कमजोरी को दूर, शरीर को बनाती है पुष्ट तथा पाचनक्रिया को करती है मजबूत। **सेब पेय :** सेब है उत्तम स्वास्थ्य हेतु पोषण और स्वाद से भरपूर। **मैंगो ओज :** आम है सप्तधातुवर्धक व उत्तम हृदयपोषक। **अनन्नास पेय :** अनन्नास है रोगप्रतिरोधक क्षमता, पाचनशक्ति तथा नेत्रज्योति वर्धक।

हरड़ रसायन गोली

हरड़ रसायन गोली चूसकर खायें,
पाचन-समस्या को दूर भगायें...

यह अपचित भोजन को पचानेवाला व शरीर में स्थित कच्चे रस को पकाकर शरीर को शुद्ध करनेवाला उत्तम रसायन योग है। ये गोलियाँ त्रिदोषशामक हैं। इन्हें चूसकर खाने से भूख खुलती है। ये छाती व पेट में संचित कफ को नष्ट करती हैं।

उपरोक्त उत्पादों की प्राप्ति की जानकारी देखें आवरण पृष्ठ ३ के अंत में।

डाउनलोड करें "Rishi Prasad" व "Rishi Darshan" Apps - Google play Store से।